दार्शनिक निबन्ध

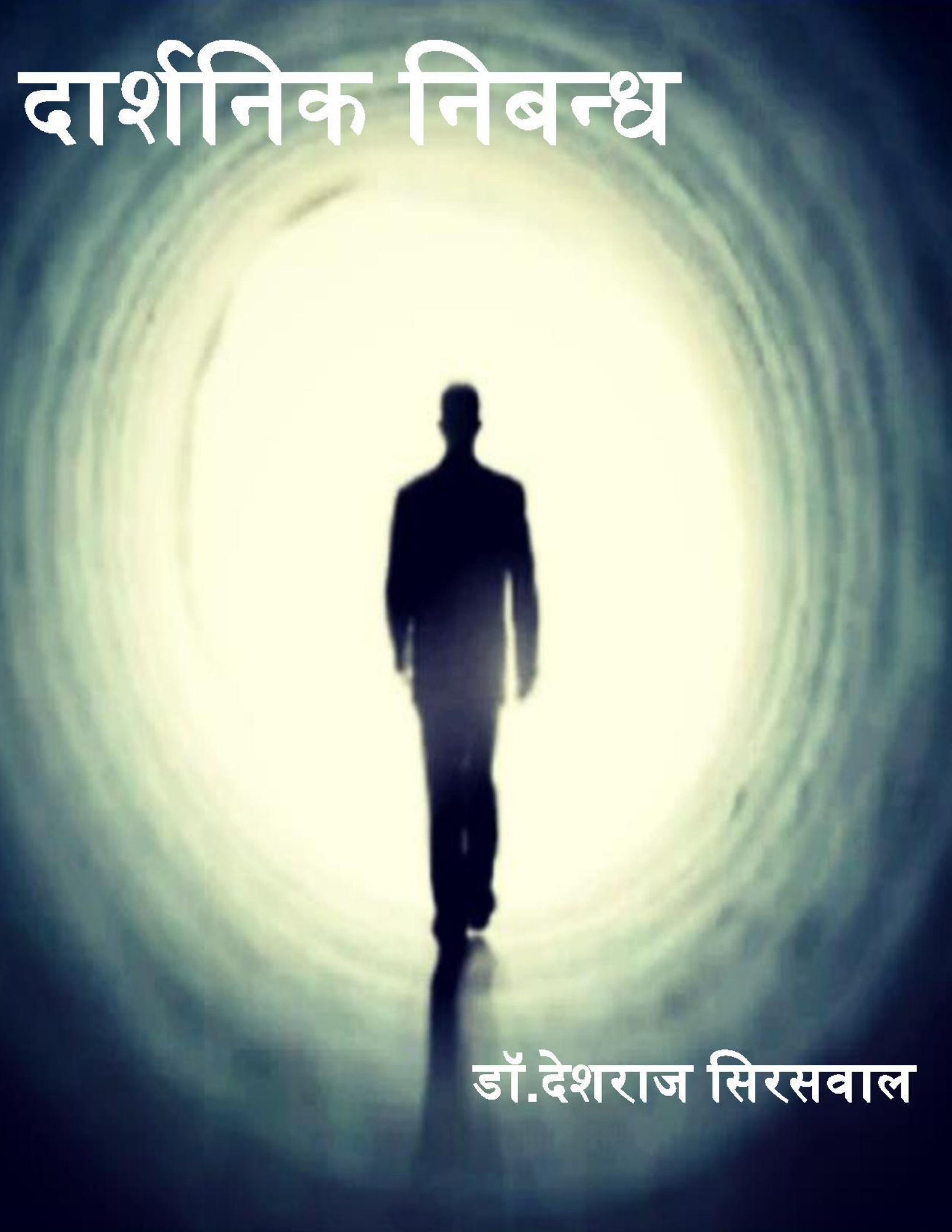

डॉ.देशराज सिरसवाल

दार्शनिक निबन्ध

(Philosophical Essays)

Dr. Desh Raj Sirswal

CPPIS
Pehowa(Kurukshetra)

Centre for Positive Philosophy and Interdisciplinary Studies (CPPIS), Milestone Education Society (Regd.), Pehowa (Kurukshetra)-136128 (HARYANA)

दार्शनिक निबन्ध (Philosophical Essays)

Dr. Desh Raj Sirswal

No. CPPIS/2020/01

First Edition: March 2020

© Centre for Positive Philosophy and Interdisciplinary Studies (CPPIS), Pehowa (Kurukshetra)

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the above mentioned publisher of this book.

Author:

Dr. Desh Raj Sirswal, Assistant Professor (Philosophy), Post Graduate Govt. College, Sector-46, Chandigarh.

Publisher:

Centre for Positive Philosophy and Interdisciplinary Studies (CPPIS), Pehowa (Kurukshetra)-136128 (Haryana) Website: http://positivephilosophy.webs.com , Email: cppiskkr@gmail.com

इस पुस्तक में .....

1. श्रीमद्भगवदगीता : सृजनात्मक जीवन का आदर्श

2. श्रीमदभगवदगीता : मानव-उत्कर्ष के लिए 18 अध्याय

3. हरियाणा में दर्शन एवम् लोकधर्म का विकास

4. बौद्ध प्रश्न परम्परा : मानव आस्तित्व की नैतिक व्याख्या

1. श्रीमद्भगवदगीता : सृजनात्मक जीवन का आदर्श

(Shrimad Bhagavad Gita: Ideals of Creative Life)

डॉ देशराज सिरसवाल

सारांश

वर्तमान समय में बढती हुए अस्थिरता, निराशा और अनिश्चितता में व्यक्ति अपने आपको थका हुआ महसूस कर अपनी सृजनात्मक शक्ति को खो रहा है. कुछ तो परिस्थितियों की मार, चाहे वह भावनात्मक हों , शैक्षिक हों या आर्थिक क्षेत्र की हों और कुछ उचित मार्गदर्शन के अभाव में जिन्दगी के प्रति प्रतिक्रियावादी होकर अन्तर्मुखता का शिकार हो रहा है. अनिश्चितता ने उसके मन में इतनी गहरी पैठ की है,कि वे पूर्ण समर्पण भाव से किसी काम को नहीं कर रहे बल्कि "कैरियर" के लिए उन्हें जो भी सम्भावित लगता है, उसी की तरफ़ भाग खड़े होते हैं, चाहे वह उनकी योग्यता, रूचि के अनुरूप भी न हो. ऐसे में तब हम कैसे उम्मीद लगा सकते हैं कि वे अपनी सृजनात्मकता और मौलिकता को बचा सकेंगें और समाज व राष्ट्र के लिए कुछ महत्वपूर्ण कर सकेंगें ? आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आप को कैसे तैयार करें ? जिससे शिक्षा, व्यवसाय और समाज के विकास में कुछ महत्वपूर्ण योगदान दे सकें. इसके लिए मुझे श्रीमदभगवदगीता के दर्शन से महत्वपूर्ण कुछ दिखाई नहीं देता. श्रीमदभगवदगीता मानवीय जीवन के मूल्यों का आदर्शग्रन्थ है. इस संसार के हर व्यक्ति में दिव्यता को प्राप्त करने की क्षमता है. हर मनुष्य का कर्तव्य है की वह इस दिव्यता जो पहचाने और अपने सामाजिक जीवन में निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करे. जीवन का मुख्य उद्देश्य अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को पूरा करने के साथ साथ सभी मानवों के सह-आस्तित्व को स्वीकार करना भी है. अपने कर्म के प्रति समर्पित भाव रखते हुए, आत्मकेन्द्रित न होते हुए, उसे कर्तव्य के रूप में समाज के प्रति समर्पित करे तो वह पूर्णता को प्राप्त हो सकता है. प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य विषय श्रीमद्भगवदगीता के उन्हीं आदर्शों की ओर इंगित करना है, जो वर्तमान समय में मानव की सृजनात्मकता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं.

सर्जनात्मकता क्या है?

सर्जनात्मकता अथवा रचनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से संबद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, आविष्कृत करने या पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया है। यह एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है। सृजनात्मकता के संदर्भ में वैयक्तिक क्षमता और प्रशिक्षण का आनुपातिक संबन्ध है।[1] राधिका मेनन के अनुसार "सृजनशीलता का कोई एक आधिकारिक परिप्रेक्ष्य या परिभाषा नहीं है और दिलचस्प बात तो यह है कि सृजनशीलता के लिहाज से मनोविज्ञान द्वारा अध्ययन की गई दूसरी बातों के विपरीत खुद सृजन-शीलता को मापने को कोई सर्व-स्वीकृति तकनीक भी नहीं है। संक्षिप्ट ब्रिटेनिका विश्वकोष ने सृजनात्मकता की परिभाषा देते हुए उसे एक नया विचार या सोच, कल्पनाशील हुनर के जरिए कोई नहीं चीज निर्मित करने की क्षमता, किसी समस्या का कोई नया हल, नया तरीका या युक्ति या कोई नई कलात्मक वस्तु या रूप बताया है। विश्लेषण, क्रमिक, विकास व सुधारों और नई

खोजों के मानकों पर आगे बढने को भी सृजनशीलता समझा जाता है। इस परिभाषा को लेने पर अंतर्दृष्टि किसी खास क्षेत्र की बपौती नहीं रह जाती।" [2]

सृजनात्मकता के अगर शाब्दिक अर्थ की बात किया जाये तो "create" का शाब्दिक अर्थ है – सृजन करना, उत्पन्न करना आदि. "Creativity" से अर्थ है, विचारों और वस्तुओं में नये सबंध देखना. अब प्रश्न उठता है की क्या नवीनता का होना सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है हम सृजनात्मकता की विशेषताओं का निम्नलिखित रूप से उल्लेख कर सकते हैं :

- सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है अथवा सृजनात्मकता सभी प्राणियों में होती है, किसी में अधिक और किसी में कम.
- सृजनात्मक योग्यता प्रशिक्षण तथा शिक्षा द्वारा विकसित की जा सकती है .
- सृजनात्मकता अभिव्यक्ति द्वारा किसी नई वस्तु को उत्पन्न किया जाता है, परन्तु यह जरूरी नहीं कि वह वस्तु पूर्णरूप से नई हो.
- सृजनात्मकता प्रक्रम से जो उत्पादन होता है वह मौलिक होता है.
- सृजनात्मकता और बुद्धि में अधिक सम्बन्ध नहीं है .
- गिल्फोर्ड ने अपने अनुसंधानों के आधार और यह निष्कर्ष निकला की सृजनात्मक चिन्तन में निम्नलिखित योग्यताएं शामिल होती है:
    a) समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता (Sensitivity of Problems)
    b) लचीलापन (Flexibility)
    c) विस्तण (Elaboration)
    d) प्रवाह(Fluency)
    e) पुन: परिभाषित करना (Re-definition)
    f) अमूर्त एवम् संक्षेपण करने की क्षमता (Abstracting ability)
    g) व्यवस्थित एवम वर्गीकरण करने की क्षमता (Ability to arrange)
    h) संगठित एवम् सुगठित करने की क्षमता (Ability to coherence and organization)
    i) संश्लिष्ठ एवम् सुबद्ध करने की क्षमता (Ability to synthesize and closure)

अत: हम यह कह सकते हैं कि सृजनशीलता वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपने वातावरण को इस प्रकार बल देना चाहता है कि उसमें वह नए विचार नमूने अथवा सम्बन्ध उत्पन्न कर सके. सृजनशीलता मौलिक कार्य करने की क्षमता है या जिससे हम पुराने अनुभवों को पुनः निर्मित करके नई रचना करने की उपयोगी योग्यता कह सकते हैं.[3]

कुंठा, निराशा के चलते बहुत से युवा या तो नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं या अनुचित साधनों की तरफ जा रहें हैं. हमारी आवश्यकता इस बात की हैं कि हमें अपने उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए और उसकी प्राप्ति के साधनों और अपनी योग्यता के प्रति निश्चितता होनी चाहिए. अपनी रुचियों की स्पष्टता होनी चाहिए, आदमी उसी काम को अच्छे से कर सकता है जिसमें उसकी रूचि हो, थोपा हुआकाम वह होता है , जो उसकी रूचि के अनुरूप न हो, तो उसमें सृजनात्मकता का आभाव रहता है. एक बार काम से अलगाव होने पर यह हमारे स्वभाव का एक निश्चित हिस्सा बन जाता है.

अपनी मौलिकता को बचाने के लिए साहित्य में रूचि रखें, क्योंकि "शब्द" ब्रह्म है. कभी कभी हम उनसे वह "राज" पा लेते हों, जो किसी के साथ वर्षों तक रहने पर भी नहीं मिल सकता. जिन्दगी से लगाव रखिये, जिस भी काम को अपने हाथ में ले, उसे पूरी जीवन पूरी लग्न के साथ करें. यदि हम किसी काम को पुरे समर्पित भाव से नहीं करते तो उसमें सृजनात्मकता का आभाव रहता हो और गीता हमें इस समर्पण भाव में रहना सिखाती है. अत: सृजनशील जीवन को ही चुनिए.

जब हम अपनी योग्यताओं और सीमाओं को पहचानते हों, तो बहुत हद तक अपने जीवन और किये जाने वाले कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर कर सकते हैं. उदाहरणस्वरूप भावात्मक के रूप में ले तो हमें रिश्तों की सीमाओं को जानना और मानना चाहिए. यदि हम उन सीमाओं को लाँघ जाते हैं, तो सम्बन्ध खराब होने में समय नहीं लगता और तब हम अपने बचाव में बस अपने आपको कोसने लगते हैं. हर रिश्ते की गरिमा और सीमा को पहचानते हुए, निभाने से यह फायदा होता है की हम इससे आत्मविश्वास को बल मिलता है. भावात्मक रिश्तों को अपनी आवश्यकता है. मित्र, सहपाठी, और अध्यापक कई बार हमें विपरीत परिस्थितियों से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं. यदि लोगों का हम पर विश्वास है और वे हमसे उम्मीद रखते हैं की हम कुछ सकारात्मक कर सकते हैं तो यह हमारे आत्म विश्वास को दुगुना कर सकता देता है. अत: अपने आत्म विश्वास को बनाये रखने के लिए हमें एक सही मार्ग को चुनना पडता है जिसका आधार बौद्धिकता हो और उद्देश्य मानवता हो. ऐसे में गीता में भावात्मक रूप से हमें मजबूत बना कर चरित्र निर्माण में मदद देती हैं.

परिवर्तनशीलता जिन्दगी का अटूट नियम है , उसको मानते हुए व्यक्ति को देश-काल , परिस्थिति के अनुसार लोचशील होना चाहिए, यदि वह ऐसा नहीं कर सकता तो समय उसे पीछे छोड़ देता है. अपनी असफलताओं , अपनी कमियों का विश्लेषण करो औr जो भी परिवर्तन की आवश्यकता हो उसे कर, दोबारा पूरी मेहनत और लग्न से कार्य करने के लिए दृढ निश्चय होना चाहिए. संकल्प हमेशा कर्म मांगता हो . कहने का भाव है की यदि आप कुछ काम करना चाहते हैं तो साथ ही उसको शुरू कर दें. कार्य करते वक्त धैर्य बनाये रखें क्योंकि अधीर होना, पूरी मेहनत और लग्न को खत्म कर देता है .

अपनी असफलताओं से सिखने की आदत डालें . किसी भी व्यक्ति की अवहेलना ना करें. गतानुभवों/समस्याओं से सिखने का, उनके विश्लेषण का ढंग सीखें. अपने में संवेदनशीलता पैदा करें , अपने आस –पडोस के प्रति संवेदनशील हों . आप दूसरों की समस्यायों को निपटाने में जो सहयोग देंगे, तो यह आपके आत्मविश्वास, सृजनात्मकता के परिक्षण का आपको मौका मिलेगा. दूसरों की सुनें यदि आप यह आदत डालते हैं तो दुसरे भी आपकी सुनना चाहेंगे. व्यक्ति को गुनग्राही होना चाहिए.

हर क्षण से कुछ सिखने की लग्न होनी चाहिए , जिससे वी नई उत्पन्न परिस्थिति और आवश्यकता के अनुरूप अपने आप को ढाल सकें. यदि आप ऐसा करते हुए कुछ छोड़ते हैं, तो उसमे समझ होती है और वह छोड़ना उतना दुखपूर्ण नहीं होता, यह सहज होता है . स्वानुभव का अपना आयर दुसरे के विचारों और अनुभव का अपना महत्व है, क्योंकि किसी कवि ने कहा है –

तूफानों से लड़ने की जो हिम्मत देता है .

जो भी है वह, मैं उसका उपकार मानता हूँ..

जब कभी ऐसा लगे की आपकी मेहनत बेकार हो रही है, तो आपको पूरी परिस्थिति को समझ विचारकर उस कार्य को छोड़ देना चाहिए . यदि आप इस ढंग से किसी काम को छोड़ते हैं तो वह सृजनात्मक परिणाम लाता है. यदि उसके छोड़ने के बाद भी कुछ कुंठा रहती है तो यह आपकी सफलता में रोड़ा बन सकता है सहजता से इसे स्वीकार करें. श्रीमदभगवदगीता मानवीय जीवन के मूल्यों का आदर्शग्रन्थ है. इस संसार के हर व्यक्ति में दिव्यता को प्राप्त करने की क्षमता है. हर मनुष्य का कर्तव्य है की वह इस दिव्यता जो पहचाने और अपने सामाजिक जीवन में निर्धारित उद्धेश्यों को पूरा करे. जीवन का मुख्य उद्देश्य अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को पूरा करने के साथ साथ सभी मानवों से सह-आस्तित्व को भी स्वीकार करना है. अपने कर्म के प्रति समर्पित भाव रखते हुए, आत्मकेन्द्रित न होते हुए, उसे कर्तव्य के रूप में समाज के प्रति समर्पित करे तो वह पूर्णता को प्राप्त हो सकता है.[4]

अंत में, अपने लक्ष्य पर दृढ निश्चय, लग्न और मेहनत, धैर्य से लगे रहें , तो सफलता अवश्य मिलती है. सौ प्रतिशत निश्चितता से अपने काम में लगे रहें. काम सिर्फ काम के लिए कीजिए. यदि आप किसी काम को करते हुए भी दूसरी और अपना मन भटकाकर रखते हैं तो यह हमारी इच्छा शक्ति को कमजोर करता है और हमें दोराहे पर खड़ा कर देता है . अत: श्रीमदभगवदगीता[5] के व्यावहारिक आदर्शों को मानते हुए काम करते वक्त कोई दुविधा या खालीपन न छोड़ें क्योंकि किसी कवि ने लिखा है :

दो दिनों के बीच
एक छोटी-सी रात बेचारी है.
कर लो जो चाहे,
बन लो जो चाहे,
आज भी तुम्हारा है .
कल भी तुम्हारा है..

सन्दर्भ:

1. डॉ. देशराज सिरसवाल " दर्शन, सृजनात्मकता और मानवीय सम्बन्ध " in Milestone Education Review (The Journal of Ideas on Educational & Social Transformation), Year 08, No.02, October, 2017, pp.04-13 (ISSN: 2278-2168).

2. राधिका मेनन, “सामाजिक संदर्भ में सृजनात्मकता”, देशबन्धु, मार्च 2011 http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/5259/9/0#.VL51Z3I5CP813.
3. प्रोमिला ओबरॉय, अधिगमकर्ता, अधिगम एवम् ज्ञान का मनोविज्ञान, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी (हरियाणा) 2014, पृष्ठ 294-295.
4. डॉ. देशराज सिरसवाल द्वारा प्रस्तुत लेख “श्रीमदभगवदगीता : मानव-उत्कर्ष के लिए 18 अध्याय (Shrimad Bhagvad Geeta: 18 Chapters for Human Excellence) से उधृत National Seminar on Bhagvad Gita for Human Excellence organized by Department of Psychology(USOL), Department of Philosophy (USOL) & Interdisciplinary Centre for Swami Vivekananda Studies, Panjab University, Chandigarh on 21st December, 2018.
5. साधारणभाषाटिकासहित, श्रीमदभगवदगीता (मोटे अक्षरवाली), गीताप्रेस, गोरखपुर.

2. श्रीमदभगवदगीता : मानव-उत्कर्ष के लिए 18 अध्याय

(Shrimad Bhagvad Geeta: 18 Chapters for Human Excellence)

भारतीय दर्शन में श्रीमदभगवदगीता को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है. इस दर्शन की व्याख्या विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने जीवन उद्धेश्यों के अनुसार की है, जिसे कभी ज्ञानयोग, कभी कर्मयोग और कभी भक्तियोग के द्वारा प्रतिपादित किया जाता रहा है. श्रीमदभगवदगीता ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है, जो हमें श्रीकृष्ण की वैचारिक परिपक्वता और विराट चरित्र से परिचित करवाती है तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण के रूप में हमारे समक्ष स्थापित करती है. जीवन के विभिन्न संघर्षो को देखते हुए, वर्तमान समय में मानव-उत्कर्ष शिक्षा का मुख्य बिंदु होना चाहिए. आज के मनुष्य को भौतिक विकास के साथ-साथ, मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आत्मिक स्तर पर भी सामान्तर विकास की जरूरत है. श्रीमदभगवदगीता के सभी 18 अध्यायों में एक उद्देश्य समाहित है और यह हमें मानव उत्कर्ष से सम्बन्धित सिद्धांतों का पूर्णरूपेण परिचय देती है. इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य इन्हीं सिद्धांतों को चिन्हित करना है.

परिचय

श्रीमदभगवदगीता हमें सांख्य-योग और वेदांत दर्शन के विचारों का सयुंक्त रूप है जिस कारण अलग-अलग दार्शनिक सम्प्रदायों के विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या की है. श्रीमदभगवद्गीता 700 शलोकों का एक ग्रन्थ हैं जोकि संस्कृत महाकाव्य "महाभारत" के भीष्मपर्व में संकलित है. जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को बहुत से दार्शनिक विषयों पर निर्देशित करते हैं जिनमें भक्ति मार्ग से के साथ साथ अनासक्त कर्म के सिद्धांत का भी उपदेश देते हैं, गीता में उपनिषदों सार है और इसी दार्शनिक परम्परा को आगे बढ़ा रही है बेशक उपनिषदों के एक्तत्व की बजाए द्वैतवाद और ईश्वरवाद का का सम्मिश्रण हमें प्रदान करती है. भगवद्गीता पर काफी व्याख्याएं हो चुकी हैं जोकि आदिशन्कराचार्य से लेकर वर्तमान तक आती हैं, पर हमेशा इसे व्यक्ति के जीवन नैतिक में उठते नैतिक संघर्ष की और इंगित किया गया है. श्रीमदभगवदगीता के ज्ञान ने बहुत से विद्वानों, लेखकों, वैज्ञानिकों तथा दार्शनिकों जैसे महात्मा गाँधी, तिलक, अल्बर्ट आइंस्टीन, डॉ अल्बर्ट स्वेत्जर, हेर्मन हेस्से, एमर्सन , हक्सले, एनी बेसेंट, इत्यादि को प्रभावित किया और वर्तमान में भी लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही है. यह मानवीय समस्यायों का समाधान बड़े मानवीय ढंग से ही प्रदान करती है.

श्रीमदभगवदगीता 18 अध्याय और इसके मुख्य सन्देश:

"गीता" का शाब्दिक अर्थ गीत या कविता होता है और "भगवत" का अर्थ दैविक या ईश्वरीय होता है अत: इसे "ईश्वर का गीत या दैवीय गीत" भी कहा जाता है, इसे मोक्षशास्त्र का शीर्षक भी दिया जाता है. श्रीमदभगवदगीता में 18 अध्याय हैं और हर अध्याय का अपना एक विषय है. किसी भी पुस्तक को अगर हमें सही ढंग से समझना है तो हमें उसे पूर्णरूप से पढना पड़ता है. जिस प्रकार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन की समस्यायों में उलझकर कर्तव्य से विमुख हो जाता है और जीवन की समस्यायों से लड़ने की बजाए उनकासे पलायन का मन बना लेता है उसी प्रकार अर्जुन भी अपने कर्तव्य से विमुख हो जाते हैं. मानवजीवन की

विशेषता मानव को प्राप्त बौधिक शक्ति ही है और इसी का सही समय पर उपयोग ही मानव को बाकि चेतन जगत से अलग बनाता है. यहाँ भी हम गीता के 18 अध्यायों को 18 मुख्य सन्देशों के रूप में समझ रहे हैं:

- **अध्याय-1 अर्जुनविषादयोग:** अनुचित चिन्तन ही जीवन में मुख्य समस्या है (Wrong thinking is the only problem in life). जब शौर्य और धैर्य, साहस और बल इन चारों गुणों से युक्त अर्जुन पर क्षमा और प्रज्ञा यानि बुद्धि का प्रभाव बढ़ा और उन्होंने युद्ध भूमि में हथियार डाल दिए तब उनके क्षात्रधर्म का स्थान कार्पण्य ने लिया। तब कृष्ण ने तर्क से, बुद्धि से, ज्ञान से, कर्म की चर्चा से, विश्व के स्वभाव से, उसमें जीवन की स्थिति से, दोनों के नियामक अव्यय पुरुष के परिचय से और उस सर्वोपरि परम सत्तावान ब्रह्म के साक्षात दर्शन से अर्जुन को वापस प्रेरित किया। इस अध्याय में इसी तत्वचर्चा परिचय दिया गया।
- **अध्याय-2 सांख्ययोग** : उचित ज्ञान ही परम सिद्धि है (Right knowledge is the ultimate solution to) इस अध्याय में जीवन की दो प्राचीन संमानित परंपराओं का तर्कों द्वारा वर्णन आया है। अर्जुन को उस कृपण स्थिति में रोते देखकर कृष्ण ने उसका ध्यान दिलाया है कि इस प्रकार का क्लैव्य और हृदय की क्षुद्र दुर्बलता अर्जुन जैसे वीर के लिए उचित नहीं। उन्होंने बताया कि प्रज्ञादर्शन काल, कर्म और स्वभाव से होनेवाले संसार की सब घटनाओं और स्थितियों को अनिवार्य रूप से स्वीकार करता है। जीना और मरना, जन्म लेना और बढ़ना, विषयों का आना और जाना, सुख और दुख का अनुभव, ये तो संसार में होते ही हैं।
- **अध्याय-3 कर्मयोग :** स्वार्थरहित होना ही विकास और समृद्धि का रास्ता है (Selflessness is the only way to progress and prosperity.) इस अध्याय में अर्जुन ने इस विषय में और गहरा उतरने के लिए स्पष्ट प्रश्न किया कि सांख्य और योग इन दोनों मार्गों में आप किसे अच्छा समझते हैं और क्यों नहीं यह निश्चित बतसते कि वे इन दोनों में से किसे अपनायें। इसपर कृष्ण ने स्पष्टता से उत्तर दिया कि लोक में दो निष्ठायें या जीवनदृष्टियां हैं। सांख्यवादियों के लिए ज्ञानयोग है और कर्ममार्गियों के लिए कर्मयोग है। अर्थात् जो साधारण समझ के लोग कर्म में लगे हैं उन्हें उस मार्ग से उखाड़ना उचित नहीं, क्योंकि वे ज्ञानवादी बन नहीं सकते, और यदि उनका कर्म भी छूट गया तो वे दोनों ओर से भटक जायेंगे।
- **अध्याय-4 ज्ञानकर्मसन्यासयोग:** हर कर्म एक प्रार्थना हो सकता है (Every act can be an act of prayer.) इस अध्याय में, जिसका नाम ज्ञान-कर्म-संन्यास-योग है, यह बताया गया है कि ज्ञान प्राप्त करके कर्म करते हुए भी कर्मसंन्यास का फल किस तरह से प्राप्त किया जा सकता है। यहीं गीता का वह प्रसिद्ध वचन है कि जब जब धर्म की हानि होती है तब तब भगवान का अवतार होता है।

- **अध्याय -5 कर्मसन्यासयोग** : अहम को छोड़ना और अनंत के परमानंद को महसूस करना (Renounce the ego of individuality and the bliss of infinity) इस अध्याय में कर्मसंन्यास योग नामक युक्तियां फिर से और दृढ़ रूप में कहीं गई हैं। इसमें कर्म के साथ जो मन का संबंध है, उसके संस्कार पर या उसे विशुद्ध करने पर विशेष ध्यान दिलाया गया है। यह भी कहा गया है कि एक स्थान पर पहुँचकर सांख्य और योग में कोई भेद नहीं रह जाता है। किसी एक मार्ग पर ठीक प्रकार से चले तो समान फल प्राप्त होता है। जीवन के जितने कर्म हैं, सबको समर्पण कर देने से व्यक्ति एकदम शांति के ध्रुव बिंदु पर पहुँच जाता है और जल में खिले कमल के समान कर्म रूपी जल से लिप्त नहीं होता।
- **अध्याय-6 आत्मसंयमयोग :** उच्च चेतना से रोज जुड़ना (Connect to higher consciousness daily) यह अध्याय आत्मसंयम योग है जिसका विषय नाम से ही पता चलता है कि जितने विषय हैं उन सबमें इंद्रियों का संयम श्रेष्ठ है। सुख में और दुख में मन की समान स्थिति, इसे ही योग कहते हैं।
- **अध्याय- 7 ज्ञानविज्ञानयोग :** सीख का जीवन में प्रयोग (Live what you learn) इस अध्याय की संज्ञा ज्ञानविज्ञान योग है। विज्ञान की दृष्टि से अपरा और परा प्रकृति के इन दो रूपों की व्याख्या गीता ने दी है। अपरा प्रकृति में आठ तत्व हैं, पंचभूत, मन, बुद्धि और अहंकार। इसमें ईश्वर की चेष्टा के संपर्क से जो चेतना आती है उसे परा प्रकृति कहते हैं, वही जीव है। आठ तत्वों के साथ मिलकर जीवन नवां तत्व हो जाता है। इस अध्याय में भगवान के अनेक रूपों का उल्लेख किया गया है।
- **अध्याय-8 अक्षरब्रह्मयोग**: आत्म को न छोड़ना (Never Give-up on yourself.) इस अध्याय की संज्ञा अक्षर ब्रह्मयोग है। उपनिषदों में अक्षर विद्या का विस्तार हुआ और गीता में उसे अक्षरविद्या का सार कह दिया गया है। अक्षर ब्रह्म परमं, मनुष्य, अर्थात् जीव और शरीर की संयुक्त रचना का ही नाम अध्यात्म है। गीता के शब्दों में ॐ एकाक्षर ब्रह्म है।
- **अध्याय- 9 राजविद्याराजगुह्ययोग :** अनुग्रह का स्मरण (Value your Blessings) इस अध्याय को राजगुह्ययोग कहा गया है, अर्थात् यह अध्यात्म विद्या और गुह्य ज्ञान सबमें श्रेष्ठ है। मन की दिव्य शक्तियों को किस प्रकार ब्रह्ममय बनाया जाय, इसकी युक्ति ही राजविद्या है। इस क्षेत्र में ब्रह्मतत्व का निरूपण ही प्रधान है। वेद का समस्त कर्मकांड यज्ञ, अमृत, और मृत्यु, संत और असंत, और जितने भी देवी देवता है, सबका पर्यवसान ब्रह्म में है।
- **अध्याय- 10 विभूतियोग**: दिव्यता का चारों और दर्शन (See the divine all around) इस अध्याय का नाम विभूतियोग है। इसका सार यह है कि लोक में जितने देवता हैं, सब एक ही भगवान का अंश हैं। मनुष्य के समस्त गुण और अवगुण भगवान की शक्ति के ही रूप हैं। देवताओं की सत्ता को स्वीकारते हुए सबको विष्णु का रूप मानकर समन्वय की एक नई दृष्टि प्रदान की गई है जिसका नाम विभूतियोग है।

- **अध्याय-11 विश्वदर्शनयोग:** सत्य के साक्षात्कार के लिए आत्मसमर्पण (Have enough surrender to see the truth as it is.) इस अध्याय का नाम विश्वरूपदर्शन योग है। इसमें अर्जुन ने भगवान का विश्वरूप देखा। विराट रूप का अर्थ है मानवीय धरातल और परिधि के ऊपर जो अनंत विश्व का प्राणवंत रचनाविधान है, उसका साक्षात दर्शन।
- **अध्याय-12 भक्तियोग**: मन और दिल को सर्वोच्च दिव्यता में लगाना (Absorb your mind and heart to supreme divine) जब अर्जुन ने भगवान का विराट रूप देखा तो वह घबरा गया और घबराहट में उसके मुंह से 'दिशो न जाने न लभे च शर्म' वाक्य निकले। उसने प्रार्थना की, कि मानव के लिए जो स्वाभाविक स्थिति ईश्वर ने रखी है, वही पर्याप्त है।
- **अध्याय-13 क्षेत्र-क्षेत्रविभागयोग:** भौतिक वस्तुओं से विमोह और दिव्यता से सम्बन्ध (Detach from materialistic assets and attach to divine.) इस अध्याय में एक सीधा विषय क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का विचार है। यह शरीर क्षेत्र है, उसका जाननेवाला जीवात्मा क्षेत्रज्ञ है।
- **अध्याय-14 गुणत्रयविभागयोग :** जीवन दृष्टि के अनुसार जीवन (Live a life style that matches your vision.) इस अध्याय का नाम गुणत्रय विभाग योग है। यह विषय समस्त वैदिक, दार्शनिक और पौराणिक तत्वचिंतन का निचोड़ है। -सत्व, रज, तम नामक तीन गुण हैं। अकेला सत्व शांत रहता है और अकेला तम भी निश्चेष्ट रहता है, किंतु दोनों के बीच में रजोगुण उन्हें सक्रिय करता है।
- **अध्याय-15 पुरुषोतमयोग**: दिव्यता को प्राथमिकता (Give priority to divine.) इस अध्याय का नाम पुरुषोत्तमयोग है। इसमें विश्व का अश्वत्थ के रूप में वर्णन किया गया है। नर या पुरुष तीन हैं, क्षर, अक्षर और अव्यय। इनमें पंचभूत क्षर है, प्राण अक्षर है और मनस्तत्व या चेतना की संज्ञा अव्यय है।
- **अध्याय-16 दैवासुरसम्पद्विभागयोग:** अच्छा होना स्वयं में प्रतिफल है (Being good is a reward in itself.) इस अध्याय में देवासुर संपत्ति का विभाग बताया गया है। आरंभ से ही ऋग्देव में सृष्टि की कल्पना दैवी और आसुरी शक्तियों के रूप में की गई है। एक अच्छा और दूसरा बुरा।
- **अध्याय-17 श्रद्धात्रयविभागयोग**: सुख की बजाय उचित को चुनना ही वास्तविक शक्ति है (Choosing the right over the pleasant is a sign of power.) यह अध्याय श्रद्धात्रय विभाग योग है। इसका संबंध सत, रज और तम, इन तीनों गुणों से है, अर्थात् जिसमें जिस गुण का प्रादुर्भाव होता है, उसकी श्रद्धा या जीवन की निष्ठा वैसी ही बन जाती है। यज्ञ, तप, दान, कर्म ये सब इसी से संचालित होते हैं।
- **अध्याय-18 मोक्षसन्यासयोग: दिव्यता की प्राप्ति ही जीवन है** (Let's go, let's move to union with divine.) इस अध्याय में मोक्षसंन्यास योग का जिक्र है। इसमें गीता के समस्त उपदेशों का सार

एवं उपसंहार है। इसमें बताया गया है कि पृथ्वी के मानवों में और स्वर्ग के देवताओं में कोई भी ऐसा नहीं जो प्रकृति के चलाए हुए इन तीन गुणों से बचा हो। मनुष्य को क्या कार्य है, क्या अकार्य है, इसकी पहचान होनी चाहिए। धर्म और अधर्म को, बंध और मोक्ष को, वृत्ति और निवृत्ति को जो बुद्धि ठीक से पहचनाती है, वही सात्विक बुद्धि है।

<u>सन्दर्भ-ग्रन्थ:</u>

- Subhadeep Mukherjee, Bhagavad Gita: The Key Source of Modern Management, Asian J. Management; 8(1): January – March, 2017, pp.1-5.
- Arthur Kilmurray, Explorations in Yoga, the Re-Awakening of the Sacred Feminine, and the Emerging Planetary Consciousness, Page 1 of 13, Link: http://www.arthurkilmurray.com/resources-spirituality/bhagavad-gita/summary-of-the-18-chapters/
- T.N.Sethumadhavan, Introducing Srimad Bhagavad Gita - A User's Manual for Every Day Living, October 2010. Link: https://www.esamskriti.com/e/Spirituality/Bhagavad-Gita/Introducin…Bhagavad-Gita-~-A-User-colon-S-Manual-For-Every-Day-Living-1.aspx
- Know about 18 lessons of Shrimad Bhagwat Gita on this Sri Krishna Janmashtami 2018, 20/12/18, Link: https://www.jagran.com/spiritual/religion-know-about-18-lessons-o…ad-bhagwat-gita-on-this-sri-krishna-janmashtami2018-18362566.html
- Shrimad Bhagwat Geeta In Hindi ~ सम्पूणर् श्रीमद्भगवद्गीता, 20/12/2018, Link: https://www.hindisahityadarpan.in/2016/11/bhagwat-geeta-in-hindi.html
- साधारणभाषाटिकासहित, श्रीमदभगवदगीता (मोटे अक्षरवाली), गीताप्रेस, गोरखपुर.
- The Bhagvatgita or the Song Divine (with Sankskrit Text and English Translation, Gita Press, Gorakhpur,2007.
- The Bhagavad Gita Translation by Shri Purohit Swami.
- Śrīmad-Bhagavadgītā-Tātparyam, A Chapter wise Summary of the Divine Song, Svāmī Paramārthānanda Sarasvatī

3. हरियाणा में दर्शन एवम् लोकधर्म का विकास

(Development of Philosophy & Folk Religion in Haryana)

परिचय

भारतवर्ष को दर्शन और धर्म की दृष्टि से विश्वपटल पर बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है. भारतीय समाज में धार्मिक विविधता के साथ-साथ हमें लोकधर्म की क्षेत्रीय स्तर पर हमें बहुत सी धाराएँ देखने को मिलती है. हरियाणा प्रदेश की भूमि को वेद, उपनिषद, महाभारत, पुराण, गीता आदि की रचना-स्थली भी माना गया है. इसे महाराजा हर्ष, सूरदास और बाणभट्ट जैसे महान व्यक्तित्वों की भूमि के साथ-साथ लोकभाषा का साहित्य का सृजनस्थल भी रहा है. लेकिन वर्तमान में हम वैश्वीकरण, सांस्कृतिकरण, और ब्राह्मणीकरण के चलते हम उन वैचारिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव डालने वाली संस्थाओं के महत्व को भूलाकर देश के सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं. प्रस्तुत लेख में हरियाणा राज्य में दर्शन और लोकधर्म के विषय पर प्रकाश डालना मुख्य उद्देश्य है.

दर्शन का परिचय

"दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि मानव- जीवन के विविध पक्षों का बौद्धिक अवधारणात्मक चिन्तन या ऐसे चिन्तन का आलोचनात्मक मूल्यांकन दर्शन है (Pure rational conceptual thought regarding different aspects of human life or a critical thought over such kind of thought may be called as philosophy.)" (देशराज सिरसवाल (2011), पृ.37)

डॉ. ए.के. सिन्हा के अनुसार, "दार्शनिक चिन्तन मानव प्रकृति का स्वभावगत लक्षण है. किसी भी देश, समाज, अथवा प्रान्त में व्यक्ति की समाज एवं वातावरण के प्रति निरंतर प्रतिक्रिया होती है. इस प्रतिकिया के माध्यम से कल्पनाप्रिय तथा अंतर्दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति विश्व और मानव समाज के बारे में दार्शनिक निष्कर्ष निकलते हैं. ये विशेष व्यक्ति अपने दार्शनिक चिन्तन का युक्तिपूर्ण प्रतिपादन करते हैं. उका दार्शनिक चिन्तन युक्तिपूर्ण होने के कारण चिन्तनशील व्यक्तियों के उपर अपना प्रभाव छोड़ता है. ये चिन्तनशील व्यक्ति अपने चिंतन का प्रचार लेख , भाषण, शिक्षण, वार्तालाप इत्यादि द्वारा आम जनता में करते हैं. समय बीतने के बाद यह दार्शनिक चिन्तन, धार्मिक, नैतिक एवं सौंदर्य सम्बन्धी विश्वास में रूपांतरित हो जाता है. यह विश्वास किसी भी समाज में, रीति, परम्परा और मान्यता बन जाता है." (डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), पृ.244)

वैदिक-उपनिषद दर्शन

वैदिक-उपनिषद दर्शन का प्रभाव हरियाणा के जनमानस पर हमें स्पष्ट दिखाई देता है. ऐसा माना जाता है कि वेद- उपनिषद दर्शन का काफी अंश हरियाणा की भूमि पर रचित है. वैदिक ऋषियों ने एक विश्वव्यापक शाश्वत नियम की कल्पना की थी. उन्होंने इस नियम को "ऋत" कहा है . यही प्राकृतिक, सामाजिक एवं नैतिक नियमों का आधार है.

वेदों में एक ही परमेश्वर पर बल दिया गया है. विशेषरूप से ऋग्वेद में तत्व को एक माना गया है. ऋग्वेद के अनुसार तत्व एक है किन्तु दार्शनिक उसी एक ही तत्व को विभिन्न रूप से व्याख्या करते हैं. अंत में इन्ही परमपुरुष की उपनिषदों में निर्गुण ब्रहम के रूप में कल्पना की है.

भारतीय दर्शन के अंतर्गत 9 दर्शन आते हैं जिन्हें आस्तिक और नास्तिक की श्रेणी में विभक्त किया है जो निम्नलिखित हैं:

आस्तिक दर्शन : न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा-वेदांत

नास्तिक दर्शन : चार्वाक, जैन, बौद्ध

शैव एवं शाक्य दर्शन

वैदिक धर्म-दर्शन से पूर्व के लोगों 'सैन्धव सभ्यता" का धर्म-विश्वास वैदिक धर्मावलम्बी लोगों से अलग था. कहा गया है कि, "ये लोग मोटे रूप से द्वीदेवतावादी थे, जिसमें पुरुष के रूप में वे एक तीन मुख वाले योगी की पूजा करते थे, जिसे हम शिव का रूप मान सकते हैं." (के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), पृ.66) मातृदेवी, पशुओं इत्यादि की भी पूजा करने वाले इन लोगों का धार्मिक जीवन सीधा था.

- शिव परब्रह्म है वे शिव को सर्वोच्च मानते हैं.विश्व जननी शक्ति का वर्णन वेदों में भी पाया जाता है. मार्कंडेय पुराण में देवी को जगत जननी कहा गया है. देवी विश्व रचियता है.

हरियाणा के प्राचीन लोगों की शैव एवं शाक्य दर्शन में काफी आस्था रही है. वे शिव दर्शन के मूल सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं. उनका विश्वास अन्य दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के साथ मिश्रित हो गया है और यह मिश्रित धारणायें परम्परा के रूप में समाज में विद्यमान हैं. (डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), पृ.250)

लौकिक दर्शन (रामायण एवं महाभारत)

हरियाणा के साहित्य और समाज में रामायण एवम महाभारत का समान योगदान हैं. इन्ही के जीवन मूल्यों को वो आदर्श माना जाता है. "रामायण और महाभारत की रचना के पश्चात हिन्दू दर्शन तथा धर्म का पुनरुत्थान हुआ है. महाभारत दर्शन के साथ श्वेताश्वर उपनिषद तथा मनुसमृति की समरूपता रही है." (डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), पृ.248)

श्रीमदभगवदगीता महाभारत का विशेष अंग है जिसमे श्री कृष्ण ने अर्जुन को नैतिक सिद्धांतों से अवगत करवाया है. यह समग्र भारत और विश्व के लोगों का आदर्श ग्रन्थ है.

वास्तव में देखा जाये तो महाभारत की लगभग घटनाएँ हरियाणा में ही घटी हैं तो इसका प्रभाव सीधा हरियाणा के लोगों के जीवन- आदर्शों पर पड़ा है. हरियाणा में वैष्णव धर्म का भी खूब प्रचार हुआ जो आज भी जीवंत है.

बौद्ध एवं जैन दर्शन

हरियाणा के इतिहास को जब हम गौर से देखते हैं तो हम पाते हैं की बुद्ध की शिक्षा और बौद्ध राजाओं का यहाँ काफी प्रभाव रहा है. स्वयं बुद्ध के यहाँ प्रवचन करने के प्रमाण मिलते हैं. बौध साहित्य से हमें पता चलता है. कैथल, अग्रोहा, रोहतक और कलानौर आदि जगह पर बुद्ध ने प्रवचन किया तथा हिसार और थानेसर बौद्ध धर्म के अच्छे केंद्र बन गये थे. (के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), पृ.67)

ऐतिहासिक तौर पर देखा जाये तो हरियाणा में जैन दर्शन का भी प्रचार हुआ लेकिन बौद्ध दर्शन जितना नहीं. अग्रोहा और रोहतक में जैन धर्म के केद्र, बौद्ध धर्म के पतन के बाद बने.

यह बहुत ही मजेदार बात है की वैदिक दर्शन का केंद्र होने के बावजूद ये दो दर्शन अपनी जगह जनमानस में बना पाए और यह तभी सम्भव हो सका जब यह के लोगों ने धार्मिक संकीर्णता को जीवन में स्थान नही दिया.

संत साहित्य

मध्यकाल में हरियाणा प्रदेश में मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम और सिख तीनों धर्मों का प्रसार और प्रभाव रहा. तीनों धर्मों के लोगों में परस्पर भाईचारा था और एक दूसरे के जीवन को प्रभावित भी किया. कबीर और नानक जैसे संतों को प्रभाव समाज पर स्पष्ट रूप से छाया हुआ था.

"हरियाणा के संतों ने केवल अध्यात्मवाद को ही को अपने काव्य का प्रतिपाद्य नहीं बनाया अपितु अंधविश्वासों एवं गली-सड़ी परम्पराओं पर भी जमकर प्रहार किया. सामाजिक कुरूतियों के किले तोड़ने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई." (डॉ. पूर्णचन्द शर्मा (1990), पृ.5-6)

"समाज के बह्याडम्बरों से हमें सचेत कर सभी सहज भक्ति, नाम-स्मरण का मूल मन्त्र समझते हैं. गुरू महत्त्व सभी ने स्वीकार किया है. युग की समस्याओं के प्रति ईमानदार रहते हुए भी इन संतों ने मानव-कल्याण, लोक-मंगल की धारणा को पुष्ट करते हुए उस परब्रह्म में लीन होने का महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया है. सभी संत 'कथनी' और 'करनी' में एकरूपता के पक्षधर रहें हैं- लोक चेतना और लोक भाषा के कारण इनकी लोकप्रियता निर्विवाद मानी है."(डॉ. हुकुमचंद राजपाल (2003), पृ.iii-iv)

सूफी साहित्य

हरियाणा प्रदेश में संतों की भांति सूफी कवियों की भी परम्परा रही है. महम जिला रोहतक के एक सूफी कवि सैयद गुलाम हुसैन शाह की तुलना 'रसखान से की जाती है लेकिन पानीपत को ही उर्दू का केंद्र माना गया जहाँ से कई साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया.

हरियाणा प्रदेश दिल्ली के निकट होने के करण तथा पश्चिमी और पूर्वी पंजाब की अपेक्षा अधिक शांत होने के कारण सूफी-संतों के लिए आकर्षण का कारण बना. शताब्दियों तक अनेक सूफी –संतों ने हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर रहकर अध्यात्म-साधना की तथा इस प्रदेश के, सामाजिक एवं राजनितिक दृष्टि से उत्पीडित लोनों को न केवल मानसिक शांति ही प्रदान की अपितु उनके सुख-दुःख में भागीदार बनकर उनके हृदय में मुसलमानों के प्रति उदित होने वाली घृणा को भी शमित किया." (डॉ. नरेश (2002), पृ.07)

हरियाणा में सूफीमत के विभिन्न सम्प्रदायों का निर्वाह करने वाले चिश्ती संत, कादिरी संत , नकशबंदी संत, कलंदरी संत आदि का साहित्य दर्शन हमें आसानी से मिल जाता है.

सुधारवादी एवं राष्ट्रिय विचारक

ईस्ट इंडिया कंपनी के राज की स्थापना के बाद इसाई धर्म का भी प्रचार प्रसार बढ़ गया . 1875 में स्वामी दयानंद ने आर्यसमाज की स्थापना की थी हरियाणा में भी आकर 1880 में प्रचार किया, उसके बाद लाला लाजपतराय ने इसकी कमान सम्भाली और हरियाणा ने भी एक नए चिन्तन को समाज में जगह दी.

आर्य समाज से प्रभावित होकर हरियाणा के पौराणिक हिन्दुओं ने सनातन धर्म सभा का निर्माण किया जिसके मुख्य नेता झज्जर के पंडित दीनदयालु शर्मा थे.

मुसलमानों ने अंजुमने इस्लामियां और सिखों ने सिंहसभा नाम से सुधारवादी आन्दोलन में योगदान दिया और समाज में फैली कुरूतियों जसे तम्बाकू, शराब निषेध, बाल विवाह पर रोक तथा शिक्षा का प्रचार प्रसार किया.

हरियाणा शुरू से ही विविधताओं को अपने में संजोय हुए रहा है इस कारण यह काफी कम समय में आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकास की ओर लग गया. यहाँ के जनमानस ने हर विचार को सहर्ष अपनाया और उसकी प्रगति को अपनी प्रगति के साथ आत्मसात किया.

सभी सुधारक हमारे लिए दार्शनिक चिन्तन में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वो किसी न किसी दर्शन और आस्था के के प्रतिबिम्ब बन समाज विकास में लगे हुए थे.

अकादमिक क्षेत्र में दर्शन की वर्तमान स्थिति

हरियाणा क्षेत्र में कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय, कुरुक्षेत्र में स्नातकोतर स्तर (रेगुलर और पत्राचार) दर्शन पढ़ाया जाता है और मात्र 10 महाविद्यालों में स्नातक स्तर पर दर्शन का अध्ययन और अध्यापन होता है. दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित अन्य पाठ्यक्रम जैसे डिप्लोमा इन रीजनिंग, सर्टिफिकेट कोर्स इन भगवद्गीता इत्यादि भी उपलब्ध हैं. डॉ.अजित कुमार सिन्हा ने भारतीय दर्शन जगत में काफी महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है.

1984-85 के आसपास कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय का दर्शन विभाग, तत्वमीमांसा और समाज-दर्शन पर शोध में राष्ट्रियस्तर पर पहचान रखता था (के. सत्चिदानन्द मूर्ति (1991), पृ..129) तथा तर्कशास्त्र, विज्ञान और दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन सम्बन्धी पठन-पाठन पर महत्व दिया जाता था.. शहीद महीलाल इंस्टिट्यूट , पलवल (हरियाणा) में भी दर्शन में स्नातकोतर उपलब्ध है जोकि ऍम. डी. यू. रोहतक से सम्बद्ध है. अशोक विश्विद्यालय, सोनीपत और जी.डी.गोयनका विश्विद्यालय, गुरुग्राम में भी केवल स्नातक स्तर पर ही दर्शन की शिक्षा उपलब्ध है.

संस्कृत के पाठ्यक्रम में भी भारतीय दर्शन को पाठ्यक्रम में रखा गया है. साथ ही योगदर्शन में कुछ पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं जिन्हें शारीरिक शिक्षा विभागों द्वारा संचालित किया जाता है. शिक्षाशास्त्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भी दर्शन के सिद्धांतों का वर्णन किया जाता है.

कुछ दार्शनिकों और दर्शन सम्प्रदायों के अध्ययन केंद्र भी हरियाणा के विश्विद्यालयों और महाविद्यालों में स्थापित हुए हैं जैसे गाँधी स्टडी सेंटर, श्री अरविन्द स्टडी सेंटर, स्वामी विवेकानंद स्टडी सेंटर, डॉ अम्बेडकर स्टडी सेंटर, बुद्धिस्ट स्टडी सेंटर, महाऋषि वाल्मीकि चेयर, स्वामी दयानंद चेयर, सेंटर ऑफ़ एथिक्स, स्पिरिचुअलीटी एंड सस्टेनबिलिटी, महात्मा गाँधी सेंटर फॉर पिस स्टडीज, गुरु जम्बेश्वर जी महाराज इंस्टिट्यूट ऑफ़ रिलीजियस स्टडीज, श्री गुलजारीलाल नंदा सेंटर ऑफ़ एथिक्स, फिलोसोफी, म्यूजियम एंड लाइब्रेरी एंड सेंटर फॉर पॉजिटिव फिलोसोफी एंड इंटरडीस्प्लिनरी स्टडीज इत्यादि. पर इनकी गणना राष्ट्रिय स्तर पर नगण्य है.

वर्तमान समय में देखा जाये तो हरियाणा में दर्शन के पठन और मनन की एक विस्तृत परम्परा होते हुए भी यह कुछ ही अकादमिक क्षेत्र तक सिमित होकर रह गया है. जिसका मुख्य कारण यहाँ के लोगों में दर्शन और धर्म में अंतर न कर पाना रहा है.

भारत में दर्शन के विकृत रूप को देखकर डॉ. दयाकृष्ण ने अपनी पुस्तक "ज्ञानमीमांसा" में लिखा था, "दर्शन के नाम पर भारत में एक ऐसी अबौद्धिकता का प्रचार किया जाता है जिसे अध्यात्म का नाम देकर बुद्धि के अनन्त आक्षेपों से बचाया जाता है. बात शब्द की नहीं है यदि दर्शन का अर्थ वही है , जो ये लोग देते हैं तो हमें उसके लिए कोई नया नाम खोजना पड़ेगा , जिसका बुद्धि ही क्षेत्र है और तर्क जिसका प्राण है. शायद 'फिल्स्फा' उसके लिए अधिक उपयुक्त शब्द हो. जहाँ बुद्धि की बात नहीं है वहां दर्शन की बात करना फिजूल है. ध्यान लगाईये, खडताल बजाईये, प्राणायाम कीजिए, योग साधिए, यह सब ख़ुशी से कीजिए पर कम से कम इनको दर्शन की संज्ञा मत दीजिए. अलग-अलग चीजों को एक नाम से पुकारने से कोई लाभ नहीं है."

दर्शन का अध्ययन और अध्यापन तभी हो सकता है जब बौधिकता का जीवन का जीवन में समावेश करते हुए समाज और उसकी आवश्यकताओं के प्रति जागरूक हुआ जाये तथा एक अच्छे अच्छे समाज और देश बनाने का संकल्प मनुष्य में चलता रहे.

लोकधर्म एवं साहित्य

लोकधर्म से अभिप्राय है, "वास्तविक धर्म से भिन्न वे बातें या कृत्य जो जन-साधारण में प्राय धर्म के रूप में प्रचलित हों।जैसे—तंत्र-मंत्र भूत-प्रेत की पूजा- वीर पूजा आदि।" सबसे अचरज की बात है की यह हमें सिर्फ परम्परा में देखने को मिलते हैं इनका कोई लिखित इतिहास नहीं है हिंदी में लोक धर्म शब्द के अर्थ निम्नलिखित है:

- पीढ़ी से पीढ़ी तक फैली मान्यताओं, अंधविश्वासों और सांस्कृतिक प्रथाओं के एक समूह का वर्णन करता है.
- एक धर्म जो जातीय या क्षेत्रीय धार्मिक परंपराओं से बना है.
- लोगों द्वारा बनाया एक धर्म. (The WiseDictionary)

हरियाणा क्षेत्र एवं उसके आसपास के राज्यों में निम्नलिखित लोकदेवताओं का हमें वर्णन मिलता है:

- दादा नगर-खेडा (हर गाँव और शहर में)
- गोगा-पीर (बागड़)
- पाथरी वाली माता (पाथरी हरियाणा)
- पाँच बावरी (सबल सिंह, केसरमल,नथ मल, हरी सिंह. जीत सिंह बावरी)
- माता श्याम कौर इत्यादि.

अगर हम ऐतिहासिक और सामाजिक स्तर पर देखें तो ये लोकदेवता अपने समय के आदर्श पुरुष रहे होंगें और अपने क्रांतिकारी विचारों या कर्म की वजह से जनमानस के जीवन का हिस्सा बन गये. मेरा ऐसा मानना है कि वर्तमान समय में लोकधर्म और लोक-विश्वासों के ब्राह्मणीकरण और संस्कृतिकरण, हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर मूलनिवासी, आर्य-अनार्य संघर्ष की छवि प्रदान करता है और वर्तमान में "नया इतिहास" लिखने और समझने की ओर ले जाता है. आस्तित्व के लिए संघर्ष विरोध के स्वर के रूप में मुखरित होकर हमारे सामने आ रहा है.

सांस्कृतिक गतिशीलता की इस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए श्रीनिवास ने प्रारम्भ में 'ब्राह्मणीकरण' (Brahminization) शब्द का प्रयोग किया. परन्तु बाद में उसकी जगह "संस्कृतिकरण शब्द का इस्तेमाल किया. (डॉ. जे. पी. सिंह (2016) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन,) लेकिन यह शब्द आज भी हमारे सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में प्रासंगिक होने के साथ साथ व्यवहार में भी है. सुरेंद्रपाल सिंह का लेख "लोक देवता गुग्गा पीर का बदलता स्वरूप" के निम्नलिखित अंश दृश्व्य हैं:

"राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में गुग्गा पीर एक लोकप्रिय लोकदेवता है....उल्लेखनीय है कि अधिकतम गुग्गा मैडी की इमारतों के चारों कोनों पर एक एक मीनार बनी होती है जो मैडी को एक इस्लामिक स्टाइल का रूप देती हैं। मैडी के अंदर या तो मजार बनी होती है या घोड़े पर सवार हाथ में भाला उठाए हुए जाहर वीर गुग्गा की मूर्ति होती है।....

गुग्गा में आस्था रखने वाले हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। सभी जातियों के लोग गुग्गा पीर में आस्था रखते हुए दिखाई दे जाएंगे।.....अब उच्च जातियों के लिए लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गुग्गा भी उनके अन्य देवी देवताओं के बीच एक स्थान ग्रहण कर चुका है जबकि अनेकों निम्नवर्ग के समुदायों के लिए गुग्गा आज भी उनका मुख्य इष्टदेवता है।

अब मुख्य गुग्गा मैडी में मेले के समय एक महीने के लिए ब्राह्मण पुजारी भी नियुक्त कर दिया गया जो चोहिल राजपूत मुसलमान द्वारा ख़ानदानी रूप से 12 महीनों के लिए उपस्थित होने के अलावा है। पूजा विधान का यथासंभव ब्राह्मणीकरण किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। अब गुग्गा मैडियों में शिव, हनुमान, गणेश, कृष्ण आदि अन्य हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित की जाती है। पारम्परिक रूप से निम्न वर्ग के भगतों का स्थान ब्राह्मण पुजारियों द्वारा लिया जा रहा है। आरती, हवन, गणेश वंदना, संस्कृत श्लोकों के माध्यम से उच्च वर्ण के यजमान अपना स्थान बना रहे हैं। ऐसे दृष्टांत भी देखने में आते हैं कि यजमान अपने ब्राह्मण पुरोहित को मेले में अपने साथ ले जाते हैं जो मेला प्रांगण में ही ब्राह्मण हवन कर लेते हैं।

पुराने साधारण थान की जगह अब गुग्गा पीर की मूर्तियाँ घोड़े पर सवार, हाथ में भाला उठाए हुए बहादुर राजपूत के रूप में आम हो गई है। थान एक छोटा चबूतरा या घर में आले की जगह होती है जिस पर सांप की आकृति छाप दी जाती है या मिट्टी से बने घोड़े रखके पूजा की जाती है।

गुग्गा के कलेंडर और चित्र भी राजपूत योद्धा के रूप में छापे जाते हैं । इसके अलावा गोगा पुराण, गोगा चालीसा, गोगा आरती आदि पुस्तिकाएँ थोक में बेची या बाँटी जाती हैं। इन सबमें गुग्गा को गुग्गा पीर की बजाय गुग्गा वीर लिखा जाता है। एक जन नायक का जन्म और उसकी बहिष्कृत और अछूत समाज के लोक देवता के रूप में पीर से वीर की हैसियत में एक छोटे हिंदू देवता की तस्वीर हमारे सामने है।"

कुछ अन्य उदाहरण

चंद्रभूषण सिंह यादव, कृष्ण और यादवों का ब्राह्मणीकरण-Posted on August 7, 2014

https://www.bhadas4media.com/bhramanization-of-krishna-yadavs/

बाल्मीकि प्रसंग : जरूरत परंपरा-प्रक्षालन की है- ओमप्रकाश कश्यप, आखरमाला, सितम्बर 28, 2015.

https://omprakashkashyap.wordpress.com/2015/09/28/बाल्मीकि-प्रसंग-जरूरत-पर/

इतिहास को जानबूझ कर नजरअंदाज किया जा रहा है : सबरीमाला और आदिवासी देवता का ब्राह्मणीकरण- AATHIRA KONIKKARA, The Caravan, ०३ नवम्बर २०१८

Link:https://caravanmagazine.in/religion/pk-sajeev-sabarimala-mala-araya-brahminisation-adivasi-deity-hindi

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेश में दर्शन और इसके विकास का एक लम्बा तथा आकर्षक इतिहास रहा है. हमारी आज की पहली आवश्यकता बौद्धिकता के साथ जीवन यापन करना है जिसमें दर्शन का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है.

समाज के प्रति संवेदना मूल्यों से आती है और दर्शन इसमें सक्षम है. आज विश्व पटल पर दर्शन-अध्ययन विविध शाखाओं के साथ यह लगातार विकसित होता जा रहा है जिसमें कला, व्यवसाय, समाज विज्ञान, विज्ञान आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित है जिसे हरियाणवी समाज को भी पहचानने की जरूरत है. साथ में यह भी कि लोकधर्म का निर्वाह हम तभी कर पाएंगे, जब हम सबको "साधन" न मानकर "उद्देश" समझ जीवन मूल्यों का निर्माण करें.

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

- डॉ. नरेश (2002), सूफी परम्परा और हरियाणा की भूमिका, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला.
- के. सी. यादव तथा एस. आर. फोगाट (1991), हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़.डॉ. साधू राम शारदा (सं.) (1978), हरियाणा:एक सांस्कृतिक अध्ययन, भाषा विभाग हरियाणा, चंडीगढ़.
- डॉ. पूर्णचन्द शर्मा (1990), हरियाणवी साहित्य और संस्कृति, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़.
- डॉ. हुकुमचंद राजपाल (2003), उत्तरी भारत के संत, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला.
- के. सत्चिदानन्द मूर्ति (1991), फिलोसोफी इन इंडिया, मोतीलाल बनारसीदास एवं इंडियन कौंसिल ऑफ़ फिलोसोफिकल रिसर्च, नई दिल्ली.
- दया कृष्ण (1973), ज्ञान मीमांसा, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
- देशराज सिरसवाल (2011), "समकालीन भारतीय समाज में दर्शन-शास्त्र की उपादेयता", चिंतन: रिसर्च जर्नल, वर्ष 01, नं. 01, मार्च , पृ. 37-40 (ISSN:2229-7227).
- "लोक-धर्म", शब्द का अर्थ, भारतीय साहित्य ग्रन्थ, 10-12-2018: https://www.pustak.org/index.php/dictionary/word_meaning/लोक-धर्म
- The WiseDictionary, 11-12-2018, https://www.thewisedictionary.com/hindi/लोक-धर्म
- डॉ. जे. पी. सिंह (2016), आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन https://books.google.co.in/books?isbn=8120352327
- सुरेंद्रपाल सिंह, (2018), "लोक देवता गुग्गा पीर का बदलता स्वरूप", देसहरियाणा, December 10, 2018
- https://desharyana.in/2018/12/10/सुरेंद्रपाल-सिंह-लोक-देव/?fbclid=IwAR2idha2F0gvUAAcbA3PQJ9us3h7IlfQz511tjAYcVfme4b_6mfM5H49tpo

4. बौद्ध प्रश्न परम्परा : मानव आस्तित्व की नैतिक व्याख्या

(Question Tradition in Buddhism: Ethical Explanation of Human Existence)

महात्मा बुद्ध का दर्शन मानवता का दर्शन माना जाता रहा है. आज अगर हम कहीं भी विश्वशांति, नैतिक प्रगति, मूल्ययुक्त जीवन की बात करते हैं तो बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन जरूत करते हैं. बुद्ध का दर्शन आधारभूत रूप में नैतिक दर्शन है और यही विशेषता उसे अन्य दर्शनों से अलग स्वरूप देती है. इसके इसी स्वरूप की वजह से यह दर्शन भारत में जन्म लेकर भी विश्व-पटल पर अपनी पहचान बना चुका है. बौद्ध दर्शन को हम प्रेम और करुणा का दर्शन भी कह सकते हैं। "बौद्ध धर्म में इन गुणों को विकसित करने के लिए अनेक तरीके सिखाए जाते हैं, और कोई भी व्यक्ति इनसे लाभान्वित हो सकता है. सभी की समानता प्रेम और करुणा का आधार है: सभी जीवन में सुख चाहते हैं; कोई भी दुख नहीं चाहता। सभी आनन्दित रहना पसन्द करते हैं। कोई भी दुखी नहीं रहना चाहता। इस दृष्टि से हम सभी एक जैसे हैं।"1

बौद्द दर्शन की उत्पत्ति की बात करें तो "भारत में बौद्ध दर्शन गहन बौद्धिक और सामाजिक विक्षुब्धता के काल में उत्पन्न हुआ था। यह वह काल था जब वेदों की सत्ता पर शंका शुरू हो चुकी थी, ईश्वर की सर्वशक्ति और सृजकता पर प्रश्न चिह्न, जाति की गतिशीलता और जन्मजात पाबंदियों पर आघात होने लगे और ब्राह्मण कर्मकाण्डों को चुनौतियां दी जाने लगीं। उपनिषदों के रचनाकारों ने शास्त्रा विरोधी मतों के अभ्युदय के लिए दरवाजे खोल दिये और उनमें सबसे ज्यादा महत्वकारी थे ''लोकायत'' जिन्होंने धार्मिक निवारणों के विरोध में काम किया। ''न्यायवादियों'' के ज्ञानशास्त्रा ने दार्शनिक विमर्श की आधारशिला रखी, वास्तविक दुनियां को तर्क और विवेक आधारित खोजों के लिए प्रेरणा दी थी और बोझिल कर्मकांडों एवं अविवेकी अंधविश्वासों के बोझ से छुटकारा दिलाया। शासक कुलीन और जनता का ध्यान तथा उन दोनों की स्वीकृति पाने की होड़ विभिन्न वैचारिक पंथों में प्रबल थी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थे जैन और बौद्ध। यद्यपि हरएक पंथ ने दर्शनशास्त्रा में मौलिक और रोचक योगदान दिया तब भी, पूर्ववर्ती बौद्धों ने एक एकीकृत दार्शनिक पद्धति देने की कोशिश की जिसमें नैतिक आचरण और सामाजिक समीक्षा दोनों उनकी सैद्धांतिक पद्धति के मर्म में थे।"2 इस लेख का उद्देश्य बौद्ध दर्शन के नैतिक पक्ष पर जोर देना है.

<u>बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांत</u>

बौद्ध दर्शन तीन मूल सिद्धांत पर आधारित माना गया है- 1.अनीश्वरवाद 2.अनात्मवाद 3.क्षणिकवाद। यह दर्शन पूरी तरह से यथार्थ में जीने की शिक्षा देता है।

1. अनीश्वरवाद

बुद्ध ईश्वर की सत्ता नहीं मानते क्योंकि दुनिया प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम पर चलती है। प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात कारण-कार्य की श्रृंखला। इस श्रृंखला के कई चक्र हैं जिन्हें बारह अंगों में बाँटा गया है। अत: इस ब्रह्मांड को कोई

चलाने वाला नहीं है। न ही कोई उत्पत्तिकर्ता, क्योंकि उत्पत्ति कहने से अंत का भान होता है। तब न कोई प्रारंभ है और न अंत।

2. अनात्मवाद

अनात्मवाद का यह मतलब नहीं कि सच में ही 'आत्मा' नहीं है। जिसे लोग आत्मा समझते हैं, वो चेतना का अविच्छिन्न प्रवाह है। यह प्रवाह कभी भी बिखरकर जड़ से बद्ध हो सकता है और कभी भी अंधकार में लीन हो सकता है।

स्वयं के होने को जाने बगैर आत्मवान नहीं हुआ जा सकता। निर्वाण की अवस्था में ही स्वयं को जाना जा सकता है। मरने के बाद आत्मा महा सुसुप्ति में खो जाती है। वह अनंतकाल तक अंधकार में पड़ी रह सकती है या तक्षण ही दूसरा जन्म लेकर संसार के चक्र में फिर से शामिल हो सकती है। अत: आत्मा तब तक आत्मा नहीं जब तक कि बुद्धत्व घटित न हो। अत: जो जानकार हैं वे ही स्वयं के होने को पुख्ता करने के प्रति चिंतित हैं।

3. क्षणिकवाद

इस ब्रह्मांड में सब कुछ क्षणिक और नश्वर है। कुछ भी स्थायी नहीं। सब कुछ परिवर्तनशील है। यह शरीर और ब्रह्मांड उसी तरह है जैसे कि घोड़े, पहिए और पालकी के संगठित रूप को रथ कहते हैं और इन्हें अलग करने से रथ का अस्तित्व नहीं माना जा सकता।3

महात्मा बुद्ध के “अव्यक्त” प्रशन (The Unanswered Questions by Buddha)

बौद्ध धर्म ग्रन्थों के अनुसार अव्यक्त प्रशनो से अभिप्राय उन प्रश्नों से है जिनका उत्तर बुद्ध ने मना कर दिया. ‘मज्जिम निकाय’ में निम्नलिखित 10 प्रश्नों को क्रमबद्ध लिखा है :

1. संसार सनातन है (The world is eternal).
2. संसार सनातन नहीं है (The world is not eternal.)
3. संसार अनन्त है (The world is (spatially) infinite).
4. संसार अनन्त नहीं है (The world is not (spatially) infinite).
5. चेतन शरीर ही आत्मा है (The being imbued with a life force is identical with the body).
6. चेतन शरीर आत्मा नहीं है (The being imbued with a life force is not identical with the body).
7. तथागत मृत्यु के बाद आस्तित्व में रहता है (The Tathagat (a perfectly enlightened being) exists after death).

8. तथागत मृत्यु के बाद आस्तित्व में नहीं रहता है (The Tathagat (a perfectly enlightened being) does not exist after death).
9. तथागत मृत्यु से पहले और बाद में भी आस्तित्व में रहता है (The Tathagat both exits and does not exist after death).
10. तथागत न ही मृत्यु से पहले और न ही मृत्यु के बाद आस्तित्व में रहता है (The Tathagat neither exits nor does not exist after death).4

बौद्ध धर्म में नैतिकता (Ethics in Buddhism) -

बौद्ध नैतिकता में मनुष्य द्वारा मनमाने ढंग से स्वयं के उपयोगितावादी उद्देश्य के लिये बनाए गए मानक नहीं हैं। मानव निर्मित कानून और सामाजिक रीति-रिवाज बौद्ध नैतिकता का आधार नहीं है। बौद्ध नैतिकता की नींव बदलते सामाजिक रीति-रिवाजों पर नहीं, बल्कि प्रकृति के अपरिवर्तनीय कानूनों पर रखी गई है।4

बौद्ध धर्म में धर्माचरण

बौद्ध नैतिकता किसी कार्रवाई की अच्छाई या बुराई का आकलन उस इरादे या प्रेरणा के आधार पर करती है जिससे यह उत्पन्न होता है। लालच, घृणा या स्वार्थ से प्रेरित क्रिया-कलापों को बुरा माना जाता है तथा इन्हें अकुसल कम्मा कहा जाता है।जो कार्य उदारता, प्रेम और ज्ञान के गुणों से प्रेरित होते हैं वे अच्छे हैं तथा उन्हें कुसला कम्मा कहा जाता है।

जीवन के लिये तीन आवश्यक बातें

बौद्ध धर्म मानता है - बुद्धि (प्रज्ञा), नैतिक आचरण (शील) और एकाग्रता (समाधि) जीवन के लिये तीन अनिवार्य बातें हैं। बुद्धि सही दृष्टिकोण से आती है तथा यह सही इरादे की ओर ले जाती है। सही दृष्टिकोण और इरादे नैतिक आचरण के मार्गदर्शक हैं तथा इनसे मानव सही बातचीत, सही कार्रवाई, सही आजीविका और सही प्रयास की ओर उन्मुख होता है। जब ज्ञान, नैतिकता और एकाग्रता जीवन का तरीका बन जाते हैं तब एक व्यक्ति को आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

पंचशील(Pancasila)

बौद्ध धर्म आपसी विश्वास और सम्मान के साथ समाज में रहने के लिये स्वेच्छा से पांच उपदेशों को अपनाने हेतु आमंत्रित करता है। ये हैं:

- हत्या न करना

- चोरी न करना
- झूठ न बोलना
- यौन दुराचार न करना
- नशा न करना

दस विधर्मी कर्म

लोगों को सलाह दी जाती है कि वे लालच, घृणा, और कपट से दूर रहें क्योंकि इससे दूसरों को पीड़ा पहुँचेगी। इन दस कामों को तीन सेटों में बाँटा गया है:

1. शारीरिक क्रियाएँ : शारीरिक क्रिया जैसे- जीवित प्राणियों की हत्या, चोरी करना और अनैतिक संभोग।

2. मौखिक क्रियाएँ: झूठ बोलना, निंदा करना, कठोर भाषण, और व्यर्थ की बातें करना।

3. मानसिक क्रियाएँ: लोभ या इच्छा, विशेष रूप से दूसरों से संबंधित चीजों की, वैमनस्य , गलत विचार। 4

अत: हम कह सकते हैं की बौद्ध दर्शन की नैतिकता सामाजिक नहीं है, बल्कि वह अधिक व्यक्तिवादी है. यहाँ पर परम्परा या प्रमाण पर बल नहीं दिया गया बल्कि व्यवहार ज्यादा महत्वपूर्ण है. बुद्ध ने अपनी नीतिशास्त्र में प्रयोजन की शुद्धता और जीवन की सरलता पर अधिक बल दिया है.

सन्दर्भ:

1. डा. अलेक्ज़ेंडर बर्ज़िन , बौद्ध विज्ञान, मनोविज्ञान, तथा धर्म, स्टडी बुद्धिज़्म, https://studybuddhism.com/hi/unnata-adhyayana/chitta-ka-vij-nana/bhavatmaka-arogyashastra/bauddha-vij-nana-manovij-nana-tatha-dharma
2. बौद्ध नीतिशास्त्र और सामाजिक समीक्षा, भारत का इतिहास, http://itihaasam.blogspot.com/2009/01/blog-post_4412.html
3. अनिरुद्ध जोशी ‘शतायु”, बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत, वेबदुनिया, 22 सितम्बर, 2019.
4. Uanswered Questions-Wikipedia, 22 September, 2019
5. बौद्ध धर्म में नैतिकता, टू द पॉइंट ,19 सितम्बर, 2019.

Lokāyata: Journal of Positive Philosophy (ISSN 2249-8389)

Lokāyata: Journal of Positive Philosophy is an online bi-annual Peer Reviewed and Refereed Interdisciplinary Journal of *the Center for Positive Philosophy and Interdisciplinary Studies (CPPIS)*. The name Lokāyata can be traced to Kautilya's *Arthashastra*, which refers to three *ānvīkṣikī*s (logical philosophies), Yoga, Samkhya and Lokāyata. Lokāyata here still refers to logical debate (*disputatio*, "criticism") in general and not to a materialist doctrine in particular. The objectives of the journal are to encourage new thinking on concepts and theoretical frameworks in the disciplines of humanities and social sciences to disseminate such new ideas and research papers (with strong emphasis on modern implications of philosophy) which have broad relevance in society in general and man's life in particular. The Centre publishes two issues of the journal every year. Each regular issue of the journal contains full-length papers, discussions and comments, book reviews, information on new books and other relevant academic information. Each issue contains about 100 Pages.

Contact :

Dr. Desh Raj Sirswal, Near Guaga Maidi, Balmiki Basti, H.No.255/8, Pehowa, Distt. Kurukshetra (HARYANA)-136128 (India) Mobile No.09896848775, 08288883993, E-mail:cppiskkr@gmail.com,mses.02@gmail.com

Website: **http://lokayatajournal.webs.com**

About the Author:

Dr. Desh Raj Sirswal is an Assistant Professor (Philosophy), Post Graduate Govt. College, Sector-46, Chandigrarh and Programme-Co-ordinator of Centre for Positive Philosophy and Interdisciplinary Studies (CPPIS), Milestone Education Society (Regd.), Pehowa (Kurukshetra). He is the Editor of bi-annual interdisciplinary online journals *Lokāyata: Journal of Positive Philosophy and Milestone Education Review* (ISSN: 2249-8389) and *Milestone Education Review* (The Journal of Ideas on Educational & Social Transformation: ISSN: 2278-2168). He contributed several research papers in the field of philosophy, Ambedakrism and edited several books. Visit at http://drsirswal.webs.com for more details.